अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी आन्दोलन के नेताओं से अपील

शिवदास घोष

अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी आन्दोलन के नेताओं से अपील

अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी खेमे में वैचारिक मतभेदों ने आरोप-प्रत्यारोप का रूप ले लिया है, जिससे साम्राज्यवादी अति आनंदित हुए हैं और क्रांतिकारी मजदूर-वर्ग आन्दोलन को जबरदस्त आघात पहुंचा है। दो दशक से भी पहले इस खतरनाक संभावना के खिलाफ चेतावनी देते हुए इस लेख में कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच मतभेदों को सुलझाने की वैज्ञानिक प्रक्रिया के बारे में जोर दिया गया है।

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि कई सैद्धांतिक और सांगठनिक सवालों पर विश्व साम्यवादी आन्दोलन में, विशेषकर सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी तथा चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के बीच गंभीर मतभेद पैदा हुए हैं। ये सवाल ठोस रूप में रखें तो इस प्रकार हैं :

पिछले विश्वयुद्ध के बाद से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समाज के शक्ति-विन्यास में जो बदलाव आया है, उसका सही तात्पर्य क्या है? साम्राज्यवाद के प्रति और इसके साथ ही पुराने औपनिवेशिक साम्राज्यवाद से भिन्न जो नव-साम्राज्यवाद है, उसके प्रति कम्युनिस्टों का क्या रवैया होना चाहिए? प्रथम विश्वयुद्ध के समय लेनिन द्वारा प्रतिपादित यह नियम कि साम्राज्यवाद अवश्यम्भावी तौर पर युद्ध को जन्म देता है—क्या आज की बदली हुई अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति में अब भी लागू है? विश्व साम्राज्यवाद की ताकत के सापेक्ष रूप से कमजोर पड़ते जाने तथा शांति व समाजवाद की शक्तियों के लगातार बढ़ते जाने की घटना का क्रांतिकारी तात्पर्य क्या है? जब तक साम्राज्यवाद अपनी मौजूदा सैनिक ताकत के साथ विश्व व्यवस्था के रूप में मौजूद रहेगा, तब तक क्या स्थायी शांति कायम की जा सकती है?

आज के शांति आन्दोलन की संभावनाएं, सीमाएं एवं क्रांतिकारी तात्पर्य क्या हैं? कम्युनिस्टों का शांति एवं युद्ध के बारे में दृष्टिकोण क्या होगा? शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति जो पूंजीवादी राष्ट्रों के साथ अपने संबंधों के मामले में हरेक समाजवादी राष्ट्र की विदेश नीति का मूलाधार है—पूंजीवाद को उखाड़ फेंककर समाजवाद कायम करने के लिए पूंजीवादी राष्ट्रों के शोषित-पीड़ित लोगों के संघर्षों को प्रोत्साहित व तेज करने और साम्राज्यवादियों के खिलाफ औपनिवेशिक व पराश्रित देशों की संघर्षरत जनता की क्रांति में उनकी सक्रिय मदद करने व जरूरत पड़े तो इन सब देशों के संघर्षरत शोषित-पीड़ित लोगों के पक्ष में साम्राज्यवादियों के खिलाफ, यहां तक कि खुलेआम सेना वाहिनी लेकर उतर पड़ने के समाजवादी राष्ट्रों के परम कर्तव्य निभाने को क्या नकार देती है? समाजवाद को निस्संदेह शांतिपूर्ण आर्थिक प्रतियोगिता में पूंजीवाद को मात देनी होगी और पूंजीवाद पर अपनी श्रेष्ठता कायम करनी होगी। लेकिन क्रांति की ताकतों के सचेत, सक्रिय और संगठित प्रयासों के बिना ही महज शांतिपूर्ण आर्थिक प्रतियोगिता के द्वारा पूंजीवाद पर समाजवाद की श्रेष्ठता कायम करने से ही क्या पूंजीवाद स्वतःस्फूर्त ढंग से खुद-ब-खुद अपनी मौत मर जायेगा? अगर ऐसा नहीं है, अगर पूंजीवाद के खात्मे और समाजवाद की स्थापना के लिए सर्वहारा जनसाधारण और अन्य शोषित जनसाधारण को मजदूर वर्ग की एक क्रांतिकारी पार्टी के नेतृत्व में एकजुट करने और उन्हें लगातार व्यक्तिगत तौर पर क्रांति के सेनानी में और इससे भी कहीं ज्यादा सामूहिक तौर पर क्रांति की सेना वाहिनी में तब्दील करने की जरूरत है, अगर शासक वर्ग और उसकी राजसत्ता के खिलाफ क्रांतिकारी संग्राम चलाने, पुरानी दमनकारी, शोषणकारी व्यवस्था को उखाड़ फेंकने और नयी व्यवस्था कायम करने, उसे सुदृढ़ करने व उसे बरकरार रखने की जरूरत है तो देश-देश में मजदूरों, किसानों व अन्य शोषित जनता के क्रांतिकारी संघर्षों को सक्रिय रूप से तेज करने के फर्ज के विपरीत समाजवाद और पूंजीवाद के बीच शांतिपूर्ण आर्थिक प्रतियोगिता को एक विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया जाना क्या उचित होगा?

क्या अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति में परिमाणात्मक व गुणात्मक, दोनों ही पहलुओं से इतना भारी परिवर्तन हो चुका है कि एक आम नियम के तौर पर आज देश-देश में शांतिपूर्ण ढंग से पूंजीवाद से समाजवाद में संक्रमण संभव है? क्या संसदीय रास्ता पूंजीवादी राष्ट्रों में शांतिपूर्ण ढंग से समाजवादी क्रांति संगठित करने के विभिन्न रूपों में से एक रूप है? जो संसद बुर्जुआ जनवाद का ही एक अंग है और पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का राजनैतिक ऊपरी ढांचा है, क्या उसे सही मायने में ''जनता की इच्छा के औजार'' में तब्दील किया जा सकता है?

एशिया और अफ्रीका के नव स्वतंत्रता प्राप्त पूंजीवादी राष्ट्रों में नवोदित राष्ट्रवाद की भूमिका का मूल्यांकन कम्युनिस्टों को कैसे करना चाहिए? इन नव स्वाधीन पूंजीवादी राष्ट्रों की अर्थ व्यवस्था में साम्राज्यवादी खतरे की जो प्रबल संभावना अन्तर्निहित है, उनकी राजसत्ता की संरचना व प्रशासनिक व्यवस्था में उत्तरोत्तर जो फासीवादी व विस्तारवादी रुझान तथा नाना रूपों में फासीवादी लक्षण जिस तरह तेजी से प्रकट हो रहे हैं, उन सब को किसी तरह नजरअंदाज करके महज चूंकि इन देशों की युद्ध-विरोधी और साम्राज्यवाद-विरोधी भूमिका विश्व शांति बनाये रखने के मामले में वास्तव में ही मदद कर रही है, इसलिए सिर्फ इसी पहलू को महत्व देना क्या वाजिब होगा?

इन सब नवोदित राष्ट्रीयतावादी देशों में अधकचरी, अधपकी, आधे-अधूरे ढंग से सम्पन्न हुई राष्ट्रीय जनवादी क्रांति को जो आज की अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति में विश्व सर्वहारा क्रांति का अभिन्न अंग है, उसे तार्किक और स्वाभाविक परिणति अर्थात समाजवादी क्रांति सम्पन्न करने की मंजिल तक नहीं पहुंचाया गया, तो ये सब नवोदित देश ही एशिया और अफ्रीका में समाजवाद कायम करने के उद्देश्य से चलाये जाने वाले क्रांतिकारी संघर्षों की सृष्टि और विकास का बलपूर्वक दमन करने के मामले में क्या असल में विश्व साम्राज्यवाद के प्रधान एजेन्ट की भूमिका ही अधिकाधिक नहीं निभाने लगेंगे? क्या तीव्र वर्ग संघर्ष के वर्तमान युग में हर तरह के युद्धों के बारे में कम्युनिस्ट तथाकथित शांतिवादियों (pacifists) जैसा ही रुख-रवैया

और नजरिया अपना सकते हैं जो जायज और नाजायज युद्धों में फर्क को गड्डमड्ड कर रहे हैं, या कम्युनिस्टों को हर हालत में लाजिमी तौर पर जायज युद्धों के पक्ष में खड़ा होना चाहिए और नाजायज युद्धों का विरोध करना चाहिए? यह बात सभी को पता है कि हर प्रकार के नाजायज युद्ध खासकर ताप-नाभिकीय युद्ध का प्रतिरोध करने के लिए मुस्तैदी से लड़ना ही सभी प्रगतिशील ताकतों का आम तौर पर और कम्युनिस्टों का खास तौर पर अन्यतम प्रमुख दायित्व है। लेकिन सवाल यह है कि इस लक्ष्य तक पहुंचने का वास्तविक उपाय क्या है? क्या संयुक्त राष्ट्र संघ के जरिये कूटनीतिक प्रयास करने, शिखर सम्मेलन करने और इसी प्रकार की अन्य कार्रवाइयों पर निर्भर रहने से ही इस लक्ष्य तक पहुंचना संभव है? या, जब तक साम्राज्यवादी तमाम ताप-नाभिकीय परीक्षण पर पाबन्दी लगाने और तमाम परमाणविक हथियारों के जखीरे को नष्ट करने के लिए राजी नहीं हो जाते, तब तक युद्ध की रोकथाम करने और शांति बनाये रखने के वास्तविक उपाय के तौर पर परमाणविक शक्ति के क्षेत्र में साम्राज्यवादी शक्तियों से हमेशा समाजवादी राष्ट्रों को आगे रहने, पूंजीवादी देशों में क्रांतिकारी संघर्षों की और औपनिवेशिक व अर्द्ध औपनिवेशिक देशों में साम्राज्यवाद-विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलनों की रफ्तार तेज करने, साम्राज्यवादियों की ओर से परमाणु युद्ध का भय दिखाकर भयादोहन करने की साजिशों और कोशिशों (nuclear blackmailing) का लगातार भण्डाफोड़ करते जाने और इन तमाम कामों को एक साथ मिलाकर करने के साथ-साथ विश्व शांति आन्दोलन को तीव्रतर करने और साथ ही साथ युद्ध का प्रतिरोध और शांति की रक्षा करने के लक्ष्य से यथासंभव कूटनीतिक कदम उठाने और कूटनीतिक कार्रवाइयां करते जाने के जरिये ही वास्तव में युद्ध का प्रतिरोध करना संभव है? क्या परमाणविक परीक्षणों पर पूरी पाबंदी लगाने और तमाम पारमाणविक हथियारों को नष्ट करने से इनकार करके साम्राज्यवादियों द्वारा लगातार जो ताप-नाभिकीय युद्ध की धमकी दी जा रही है, वही क्या आज के समय की ज्वलंत समस्याओं के बारे में कम्युनिस्ट पार्टियों और क्रांतिकारी शक्तियों के रुख-रवैये और नजरिये

को निर्धारित करने वाला प्रधान विचारणीय विषय होगा? अगर ऐसा है तो विश्व क्रांति का भविष्य क्या है? एक ओर जो ताप-नाभिकीय युद्ध का निवारण करने और तमाम परमाणविक परीक्षणों पर पूरी पाबंदी लगाने तथा तमाम परमाणु हथियारों को नष्ट करने के लिए संघर्ष चलाते जाने का फर्ज है और दूसरी ओर, विश्व क्रांतिकारी आन्दोलन की लहर तेज करने का फर्ज है–इन दोनों के बीच आपसी संबंध क्या है, क्या इनके बीच संबंध परस्पर विरोधी है या एक-दूसरे का पूरक है? इन सब अत्यंत महत्वपूर्ण सवालों के प्रति रुख-रवैये और नजरियों के आधार पर विश्व साम्यवादी आन्दोलन की आम लाइन क्या होनी चाहिए? आम तौर पर व्यक्ति पूजा को और खास तौर पर स्तालिन के नाम पर चलायी गयी व्यक्ति पूजा जो सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के अंदरूनी जीवन और विश्व साम्यवादी आन्दोलन पर जबरदस्त रूप में छा गयी थी, उसके पनपने और उसको पालने-पोसने का मूल कारण क्या था? सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा स्तालिन का नामोनिशान मिटा डालने वि-स्तालिनीकरण का जो कार्यक्रम लिया गया, उसका व्यक्तिपूजा पनपने के पीछे काम कर रहे मूल कारण को जड़ से उखाड़ फेंकने के वास्तविक कार्य से क्या कुछ भी सरोकार है? स्तालिन न केवल सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के ही नेता थे, बल्कि विश्व साम्यवादी आन्दोलन के भी नेता थे। इसलिए सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी ही क्या स्तालिन का मूल्यांकन करने की एकमात्र हकदार हो सकती है? या यह मूल्यांकन क्या एक अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी फोरम द्वारा नहीं किया जाना चाहिए?

जो लेनिनवादी आचार संहिता हरेक अन्य बिरादराना पार्टी के साथ हरेक कम्युनिस्ट पार्टी के संबंध को पक्का कर दे, उसका रूप-स्वरूप क्या हो? कोई एक खास कम्युनिस्ट पार्टी चाहे कितनी ही बड़ी और ताकतवर पार्टी हो उसकी पार्टी कांग्रेस के निर्णय को क्या विश्व साम्यवादी आन्दोलन की आम लाइन के तौर पर अन्य कम्युनिस्ट पार्टियों पर उनकी मर्जी के खिलाफ थोपा जा सकता है? क्या नेतृत्वकारी कम्युनिस्ट पार्टी के साथ किसी मतभेद को सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद से भटकाव करार दिया जा सकता है? क्या

अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी फोरम का फैसला मानकर चलना किसी एक खास कम्युनिस्ट पार्टी के लिए बाध्यकारी है? एक कम्युनिस्ट पार्टी दूसरी एक बिरादराना कम्युनिस्ट पार्टी के साथ संबंध निर्धारित करने के मामले में अपनी स्वाधीन लाइन का अनुसरण करने का हक किस हद तक पा सकती है और इस तरह की स्वाधीनता इस्तेमाल करने के क्षेत्र में इस कम्युनिस्ट पार्टी की नैतिक जिम्मेदारियां क्या-क्या हैं? अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी फोरम के फैसले से सहमत होने के बाद भी क्या कोई कम्युनिस्ट पार्टी उस फैसले के मामले में अपने संशोधित विचार पेश करके चर्चा-बहस कर लेने से पहले ही एकतरफा ढंग से ऐसा कोई कार्य और आचरण कर सकती है जो अन्तर्राष्ट्रीय फोरम द्वारा लिये फैसले के खिलाफ जाता हो? वर्तमान में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी और चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के बीच वैचारिक मतभेदों से जुड़े उपरोक्त सवाल ही निस्संदेह तमाम सवाल नहीं हैं। इनके अलावा और भी सवाल हैं। लेकिन वर्तमान वैचारिक संघर्ष के तात्पर्य और परिस्थिति की गंभीरता का अहसास कराने के लिए इतना ही हमारे लिए काफी सहायक है।

विश्व साम्यवादी खेमे के अंदर दिखाई दिये वर्तमान वैचारिक मतभेदों से जुड़े सवालों के महत्व के बारे में कोई दो राय नहीं हो सकती। वे विचारधारा और सिद्धांत के एक व्यापक दायरे को समेटे हुए हैं, समसामयिक विश्व की ज्वलंत समस्याओं के प्रति साम्यवादी दृष्टिकोण और कार्यपद्धति क्या हो तथा मानव द्वारा मानव के हर प्रकार के शोषण से मुक्ति पाने के लिए दुनिया भर के शोषित-पीड़ित लोगों द्वारा चलाये जा रहे क्रांतिकारी संघर्षों की रणनीति और रणकौशल क्या हो—ये सब विषय भी वर्तमान सैद्धांतिक सवालों से संबंधित हैं। इस क्रांतिकारी संघर्ष को सफलता की मंजिल पर पहुंचाने के लिए उपरोक्त सवालों पर सही ढंग से विचार करके मतभेदों को बगैर और देरी किये जल्दी हल करना जरूरी है। हालांकि हम विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच वैचारिक मतभेदों को हल करने की जरूरत से पूरी तरह वाकिफ हैं तथा इसके महत्व को जरा भी कम करने को तैयार नहीं हैं, फिर भी हम महसूस करते हैं कि इस प्रकार के मतभेद हल होने में काफी

लम्बा समय लगेगा। वास्तव में तीव्र वैचारिक संघर्ष और शिक्षा-दीक्षा देने व एक-दूसरे की बात को समझने-समझाने के लिए कष्टकर प्रयास, जिसके लिए काफी समय की जरूरत है, के बगैर इन वैचारिक मतभेदों का सही समाधान भी संभव नहीं है। लेकिन साम्यवादी खेमे में उभरे वैचारिक मतभेदों को केन्द्र कर, विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के आपसी रिश्तों के बीच, हाल ही में पैदा हुई कटुता का खात्मा करना ही होगा। इसके लिए और एक दिन का भी इंतजार नहीं किया जा सकता, क्योंकि इस कटुता ने इतना तीव्र रूप ले लिया है कि इसने सिर्फ विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच आपसी रिश्तों पर ही नहीं, बल्कि समाजवादी देशों के बीच आपसी संबंधों पर भी बड़ा नुकसानदेह असर डाला है। वैचारिक मतभेद चाहे जो भी क्यों न हों, कोई भी गंभीर कम्युनिस्ट ऐसा कुछ नहीं कर सकता जिससे आगे चलकर विश्व सर्वहारा की और विश्व साम्यवादी आन्दोलन की एकता तोड़ने वाला, विभिन्न समाजवादी देशों से बने समाजवादी खेमे की संघबद्धता और एकजुटता कमजोर करने वाला और सभी समाजवादी देशों के दुश्मन, साम्राज्यवाद के खिलाफ समाजवादी देशों के एकजुट ढंग से पेश आने के रास्ते में अड़चनें पैदा करने वाला असर पड़े। मजदूर वर्ग व विश्व साम्यवादी आन्दोलन की एकता और समाजवादी खेमे की एकजुटता बनाये रखना आज के समय सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, बाकी सारे मुद्दे इससे गौण हैं। इसलिए क्या यह सोचने का कोई वास्तविक कारण हो सकता है कि विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियां चूंकि अपने बीच मौजूद वैचारिक मतभेदों को दूर करने के कठिन संघर्ष में जुटी हुई हैं, इसलिए उनके बीच कटुता और यहां तक कि जो शत्रुता साम्यवादी आन्दोलन की एकता को ही खतरे में डाल दे, वह भी अनिवार्य रूप से होनी ही चाहिए? हमारा मानना है कि कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच गंभीर वैचारिक मतभेद रहते हुए भी बगैर और कोई देरी किये यह सुनिश्चित कर लेना होगा कि मजदूर वर्ग व विश्व साम्यवादी आन्दोलन की एकता, समाजवादी खेमे की एकजुटता और समाजवादी राष्ट्रों की ओर से साम्राज्यवादियों के खिलाफ एकताबद्ध आन्दोलन को आंच नहीं आयेगी।

इसलिए जिन सब विचारधारागत सवालों को केन्द्रकर विश्व साम्यवादी खेमे के अंदर मतभेद दिखाई दिये हैं, उनको लेकर इस लेख में हम चर्चा में नहीं जाना चाहते। इन सब वैचारिक मतभेदो से जुड़े विषयों पर अपना अभिमत हमने इससे पहले कई बार जनता की जानकारी के लिए खुलेआम ही रखा है। अगर जरूरत पड़ी तो निश्चय ही हम अपनी राय फिर जाहिर कर देंगे। लेकिन वैचारिक मतभेदों को केन्द्रकर विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच और समाजवादी राष्ट्रों के बीच जो मनमुटाव पैदा हुआ है, किन-किन कारणों (factors) से आपसी रिश्तों को धक्का पहुंचा है और स्वाभाविक संबंध फिर बहाल करने के लिए क्या-क्या कदम फौरन उठाये जाने चाहिए, उन विषयों तक ही हम वर्तमान चर्चा को सीमित रखेंगे।

उपरोक्त पैरा में, हमने अपनी यह आशंका व्यक्त की है कि विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच मतभेदों के विषय चाहे जितने भी महत्वपूर्ण क्यों न हों और उनको दूर करने की आवश्यकता चाहे कितनी भी क्यों न हो, वर्तमान वैचारिक मतभेदों को तत्काल दूर नहीं किया जा सकता। क्या हमारी इस आशंका के पीछे कोई वास्तविक आधार है? हां, निश्चय ही आधार है। सबसे पहले यह बता दें कि इस तरह के गंभीर वैचारिक मतभेदों के मामले में जैसे कि वर्तमान मतभेद हैं, उनके समाधान के लिए लेनिनीय आचार संहिता को सख्ती से मानकर चलने और कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच परस्पर उचित रिश्तों को बनाये रखने की जरूरत है, क्योंकि केवल इसी के जरिये ही वैचारिक संघर्ष चलाने लायक उपयुक्त माहौल पैदा किया जा सकता है। लेकिन खेद की बात है कि कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच ऐसे रिश्तों की अनुपस्थिति बहुत ही साफ जाहिर है और इसके चलते उपयुक्त माहौल का भी अभाव है। कुछ कॉमरेड शायद हमारे साथ इस विषय में सहमत न भी हो सकते हैं, फिर भी हमें यह लगता है कि मतभेदों को लेकर जो कटुता दिखाई दी है और जो समय के साथ-साथ क्रमशः बढ़ती ही जा रही है, उसके लिए कम्युनिस्टों की वैचारिक चेतना के स्तर में गिरावट ही मूलतः जिम्मेदार है और जिसके प्रभाव से वर्तमान

विश्व साम्यवादी आन्दोलन के कुछ नेता भी अछूते नहीं हैं, वरना, जब तक वे विशेष प्रतिपक्ष को बिरादराना कम्युनिस्ट पार्टियां ही मानते हैं, तब तक वैचारिक मतभेदों के रहने से कम्युनिस्ट पार्टियों के आपसी रिश्तों और समाजवादी राष्ट्रों के बीच आपसी संबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने का कोई तार्किक कारण नहीं है।

वैचारिक संघर्ष चलाने का लक्ष्य-उद्देश्य है वैचारिक, राजनैतिक व सांगठनिक पहलू से और कार्य संचालन के मामले में एकता को हमेशा सही मायने में मजबूत करना। हालांकि, दूसरों की वैचारिक ध्यान-धारणाओं को सुधारना, दूसरों के द्वारा लम्बे समय से पाले-पोसे गये सिद्धांतों, दृष्टिकोणों और पूर्वाग्रहों को ठीक करना और उनके आधार पर वैचारिक-सैद्धांतिक सवालों पर इस एकता को हासिल करना सहज साध्य नहीं है। समाजवादी देशों के बीच कूटनीतिक संबंधों को विच्छेद कर देने, पहले से वादा की गयी आर्थिक सहायता देनी बंद कर देने, वाणिज्यिक सम्बन्धों को निरस्त कर देने जैसे सांगठनिक तौर-तरीकों का सहारा लेकर अगर विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच वैचारिक मतभेदों को दूर करने का प्रयास किया गया, तो अवश्य ही वे एकता कायम करने में विफल होंगे। क्योंकि प्रतिपक्ष को डर भय दिखाकर, जोर-जबरदस्ती करके उसे घुटने टेकने के लिए मजबूर कर देने का तौर-तरीका भले ही कुछ-कुछ मामलों में अगर सफल भी हो जाये, तो भी उसके जरिये ज्यादा से ज्यादा जोर मारकर एक सतही एकता ही हासिल की जा सकती है, लेकिन विचारधारा, स्वतः उत्पन्न इच्छा और काम के क्षेत्र में एकता पर आधारित सचेत, स्वैच्छिक एकता हासिल करना ही जो वैचारिक संघर्ष का लक्ष्य है, वह एकता हासिल नहीं की जा सकती।

गलत धारणा के वशवर्ती होकर जो सब कॉमरेड चल रहे हैं, उन्हें सही शिक्षा देने और युक्ति-परामर्श के आधार पर उनका विश्वास अर्जित करने के जरिये, सही मत से सहमत कराने की कष्ट साध्य प्रक्रिया के जरिये तरह-तरह के जटिल संघर्षों के रास्ते और एक लम्बे अर्से तक क्रांतिकारी काम-काज व्यावहारिक तौर पर करने के जरिये ही वास्तविक एकता हासिल की जा सकती है।

सही मत से दूसरों को सहमत कराना कहने का मतलब यही है कि जिस व्यक्ति की गलत विचारधारा और सिद्धांत को सुधारना चाहते हैं उस व्यक्ति के मानसिक गठन को मनोवैज्ञानिक पहलू से ठीक-ठीक ढंग से समझ कर आगे बढ़ना होगा, दूसरों की गलत ध्यान-धारणा को दूर करने का दायित्व जो लेंगे, उन्हें उसके लिए सही समय का चयन कर लेना, जानना होगा, व्यक्तिगत भावावेग, पसन्द-नापसंद का परित्याग करना होगा। दूसरों को सहानुभूति के साथ सिखाने और समझाने-बुझाने के इस कष्टसाध्य रास्ते से कन्नी काटी गयी और जल्दबाजी करके येन केन-प्रकारेण, यहां तक कि सिद्धांत को विसर्जित करके भी मौजूदा वैचारिक मतभेदों को दूर करने की कोशिश की गयी तो इसका अंजाम होगा–कि विश्व साम्यवादी खेमे में वस्तुतः दरार पड़ जायेगी, या वही होगा जिसे हम इतिहास की पुनरावर्ती कह सकते हैं। अर्थात वैचारिक विरोध के मूल में हाथ न लगाकर उससे कतराकर महज अपनी एक ऊपरी तौर पर एकताबद्ध सूरत दुनिया के सामने पेश करने के लिए इधर-उधर से जिस किसी तरह एक रास्ता निकालकर उसके आधार पर मतभेदों पर पैबन्द लगाकर महज एक आपसी समझौते पर पहुंचना हो जायेगा। जैसे कि 1957 और 1960 के घोषणापत्रों में किये गये थे। विचारधारा और सिद्धांत के सवाल पर इस तरह के समझौतों से तो महज हालत और भी बदतर ही होती है। विश्व साम्यवादी खेमे की मौजूदा अवस्था ऐसे बदतर हालात होने की गवाही देती है।

यह बात आज सभी जानते हैं कि सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 20वीं कांग्रेस के समय विचारधारा के अत्यंत महत्वपूर्ण कुछ सवालों पर विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच गंभीर मतभेद दिखाई दिये थे। लेकिन समस्त वैचारिक मतभेदों को दूर करने के लिए एक नीति-आधारित वैचारिक संघर्ष न चलाकर इसकी बजाय विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के प्रतिनिधियों ने 1957 में मास्को में एक बैठक में शामिल होकर वैचारिक मतभेदों के विषयों से कन्नी काटते हुए उन पर लीपापोती की, और यहां तक कि सिद्धांतों को भी तिलांजलि देते हुए '1957 के

घोषणापत्र' के रूप में ऊपरी तौर पर एकताबद्ध दिखने वाला स्टैंड ग्रहण किया। वह वास्तव में सतही व दिखावटी एकता के आवरण में बुनियादी वैचारिक सवालों पर परस्पर विरोधी वक्तव्यों का एक अजीब घाल-मेल था। लेकिन सिद्धांत और विचारधारा के सवालों पर इस तरह के समझौते कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच वास्तविक एकता नहीं ला सकते जैसे कि यह भी नहीं ला सका। 1957 का घोषणापत्र नये मतभेद पनपाने की उपजाऊ जमीन बन गया। फिर यह भी देखा गया कि विश्व की 81 कम्युनिस्ट और वर्कर्स पार्टियों के प्रतिनिधि जब 1960 में मास्को में एक बैठक में सम्मिलित हुए तब भी मतभेदों के विषयों पर गहन विचार विश्लेषण नहीं किया गया और इस मामले में एक निर्दिष्ट लाइन या रुख अख्तियार नहीं किया गया। पहले के '1957 के घोषणापत्र के दस्तावेज' की तरह ही 1960 का बयान भी अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी आन्दोलन का संचालन करने की कोई एक सुनिर्दिष्ट लाइन पेश करने की बजाय एक बार फिर बुनियादी तौर पर अलग दो लाइनों का एक घाल-मेल बन गया, जिसने अपने-अपने चिंतन और विचारों के अनुसार अपनी लाइन का प्रचार करने का दरवाजा हरेक के लिए ही खुला छोड़ दिया। विचारधारा और सिद्धांत के सवालों पर इस तरह के जोड़-तोड़ व नीतिहीन समझौते हमेशा ही भविष्य में और भी उग्र मतभेदों के उभरने की उपजाऊ जमीन बने रहते हैं। फलस्वरूप एकता की सद्इच्छा के बावजूद 1957 की तुलना में मतभेदों का दायरा और भी बढ़ गया है, एक दूसरे की आलोचना का स्वर और भी कठोर हो गया है और मिजाज रूखा हो गया है। इन सब कुछ के कारण जिन पार्टियों के बीच में मतभेद हैं, उनमें सरेआम लड़ाई-झगड़े में लिप्त हो जाने का रुझान दिखाई दे रहा है। वैचारिक मतभेदों के मुद्दों का जब पहली बार पता चला था, तभी नीतिहीन समझौते के जरिये लीपापोती करने के बजाय अगर शुरुआत में ही उन्हें सही ढंग से सुलझा लिया गया होता, तो शक्तिशाली कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच वर्तमान वैचारिक मतभेदों के कारण विश्व साम्यवादी आन्दोलन को जो नुकसान पहुंचा है, उससे बचा जा सकता था।

यह अवश्य ही नहीं भूलना चाहिए कि सिद्धांत संबंधी वैचारिक मतभेदों के मामलों में कोई मध्यम मार्ग नहीं अपनाया जाना चाहिए या कोई समझौता नहीं किया जाना चाहिए। समस्या हल करने का आधार होगा 'या तो यह, नहीं तो वह' सिद्धांत। मध्यम मार्ग हमेशा पूरे मामले को गड़बड़ा देता है और स्थिति और भी बदतर कर देता है। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी व अन्य कुछेक पार्टियां जिस तरह कह रही हैं उस तरह अगर आज के वैचारिक मतभेदों को जैसे-तैसे नीतिहीन ढंग से जोड़-तोड़ के जरिये या अतीत की तरह इधर-उधर करके जिस किसी प्रकार से एक बीच का रास्ता अपना कर सिद्धांत की कीमत पर चट-पट निपटा डालने का प्रयास किया गया, तो यह मामले को और जटिलतर बना देगा और वैचारिक मतभेदों का आधार बना रहने के फलस्वरूप भविष्य में वे और भी बदतर रूप ले लेंगे। इसलिए वैचारिक मतभेदों के सवालों को फिलहाल चर्चा-बहस के लिए खुला रखा जाये और सही तरीके से वैचारिक संघर्ष के पक्ष में अनुकूल माहौल पैदा करने के लिए विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियां लेनिनीय आचार संहिता और रीति-नीति मानते हुए अपने बीच विचारधारा को लेकर वाद-विवादमूलक चर्चा में द्विपक्षीय मीटिंगों और सम्मेलनों के जरिये मत विनिमय करें और इस तरह वैचारिक संघर्ष चलाने के जरिये विचारधारा-सिद्धांत, संगठन और व्यवहारिक काम के क्षेत्र में सही मायने में एकता पर पहुंचने में प्रत्येक एक-दूसरी की मदद करे।

कुछ कॉमरेड दलील देते हैं कि वैचारिक मतभेदों की वजह से ही विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच और समाजवादी देशों के बीच रिश्तों में इस तरह का मनमुटाव पैदा हुआ है। हमें अफसोस है कि हम उनके साथ इस विषय पर सहमत नहीं हो सकते। इसकी वजह यह है कि इस वक्तव्य से यह साफ जाहिर हो जाता है कि जो सिद्धांत वैचारिक संघर्ष को चलाने में विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों को परिचालित करता है और जो कम्युनिस्ट आचार संहिता विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के रिश्तों को नियंत्रित करती है, उसके बारे में उनमें समझदारी की कमी है। उनका वक्तव्य दरअसल नियतिवाद के आगे आत्मसमर्पण कर देने के ही बराबर है। इसके

अलावा, वैचारिक मतभेद कहने से ही अगर पार्टीगत और राष्ट्रगत कटु, मनमुटावपूर्ण संबंध समझा जाता, जो कि इन सब कॉमरेडों की दलीलों से झलक रहा है, तब तो विश्व साम्यवादी खेमे में संघर्ष और विचारधाराओं के घात-प्रतिघात होने की कोई गुंजाइश ही नहीं रहती। विश्व साम्यवादी खेमे की विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के अंदरूनी संघर्ष और विचारों का द्वन्द्व-समन्वय अनुपस्थित हो जाने से, यह उनके बीच आपस में द्वन्द्वात्मक संबंध के बजाय अवश्यम्भावी तौर पर औपचारिक यांत्रिक संबंध को जन्म देगा और उसके फलस्वरूप विश्व साम्यवादी आन्दोलन में सामूहिक नेतृत्व को विकसित कराने और संगठन के अंदर उसे क्रियाशील रखने के लिए एकता-संघर्ष-एकता की जो अपरिहार्य द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया है, वह पूरी तरह गायब हो जायेगी।

विश्व साम्यवादी खेमे में वैचारिक मतभेद की घटना कोई नयी नहीं है। न ही भविष्य में इनके दोबारा दिखाई देने की संभावना को पूरी तरह खारिज किया जा सकता। विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच वैचारिक मतभेद अतीत में भी उभरते रहे हैं और यह कहने की जरूरत नहीं है कि भविष्य में, यहां तक कि वर्तमान मतभेदों के मसलों के सही ढंग से हल हो जाने के बाद भी फिर नये-नये मतभेद दिखाई देंगे। इतिहास के वर्तमान युग में जब राष्ट्रों का राष्ट्रीय स्वरूप अभी भी बरकरार है, जब विभिन्न देशों की कम्युनिस्ट पार्टियां भी स्वतंत्र अस्तित्व लेकर चल रही हैं, तब विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर विचार-विश्लेषण करने के सवाल पर इनके बीच मतभेद दिखाई देने बहुत ही स्वाभाविक हैं। खासकर इस वजह से कि अपने अपने राष्ट्रीय क्षेत्र में क्रांतिकारी संघर्ष को संचालित करते हुए इनके अनुभव भी भिन्न-भिन्न रहे हैं। इस तरह के मतभेद दिखाई देने कोई अस्वाभाविक नहीं है और ऐसे मतभेदों को लेकर कम्युनिस्टों को विचलित होने की भी कोई वजह नहीं है। जिस किसी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों में, यहां तक कि विचारधारा और सिद्धांत के सवालों पर भी मतभेद दिखाई दे सकते हैं। इन मतभेदों का निवारण करना और वैचारिक, राजनैतिक और सांगठनिक तौर पर और कार्य संचालन के क्षेत्र में पार्टी की एकता

को मजबूत करने का लक्ष्य लेकर जब तक पार्टी का अंदरूनी संघर्ष दूसरों को शिक्षा देने और सही धारणा से सहमत कराने के लिए समझाने-बुझाने (persuation) के सिद्धांत के आधार पर चल रहा है, तब तक इस मतभेद के होने से कोई हर्ज नहीं है। जब तक इस निष्कर्ष पर अंतिम रूप से नहीं पहुंच जाते कि वैचारिक मेल दोबारा कायम करना अब संभव नहीं है, तब तक पार्टी के अंदरूनी संघर्ष के द्वारा पार्टी की एकता और दुश्मन के खिलाफ संयुक्त कार्रवाई में खलल नहीं पड़ना चाहिए। अगर देखा जाये कि कोई भी अंदरूनी संघर्ष पार्टी के अंदरूनी मतभेदों को ही गहरा करता है, फूट को बढ़ाता है और दुश्मन के खिलाफ एकताबद्ध कार्रवाई पर नुकसानदेह असर डालता है (अगर ऐसा निष्कर्ष निकाल लिया हो कि वैचारिक मेल दोबारा कायम करना अब और संभव नहीं है), तो समझ लेना होगा कि यह संघर्ष नीतिहीन ढंग से संचालित हो रहा है, या इस तरह के वैचारिक संघर्ष में कम्युनिस्टों को जिस सिद्धांत से परिचालित होना चाहिए उस की समझदारी के मामले में कमी है, या फिर कम्युनिस्ट नैतिकता के बारे में सही चेतना का गंभीर रूप से अभाव है। एक कम्युनिस्ट पार्टी के अंदरूनी संघर्ष के क्षेत्र में जिन सब सिद्धांतों का अनुसरण करने की बात यहां कही गयी, विश्व साम्यवादी खेमे के अंदर विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के पारस्परिक वैचारिक संघर्ष के क्षेत्र में भी वह पूरी की पूरी लागू होती है। विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच वैचारिक संघर्ष अगर नीतिगत ढंग से संचालित हो–इस संघर्ष के मूल लक्ष्य व उद्देश्य को और इस संघर्ष संचालन के सिद्धांत के प्रति अगर ठीक-ठीक ढंग से सवाल रखा गया हो तो इसकी कोई वजह नहीं है कि इस संघर्ष से कम्युनिस्ट पार्टियों के आपसी रिश्तों और समाजवादी देशों के आपसी रिश्तों में कटुता पैदा हो जाये। इस वजह से कटु रिश्ते मजदूर वर्ग और विश्व साम्यवादी आन्दोलन को कमजोर कर दें, समाजवादी खेमे की एकजुटता को जर्जर कर दें और सबके साझे दुश्मन, साम्राज्यवाद के खिलाफ समाजवादी देशों की संयुक्त कार्रवाई के रास्ते में रुकावटें पैदा कर दें। लेकिन हकीकत यह है कि मौजूदा वैचारिक मतभेद कम्युनिस्ट पार्टियों के

आपसी रिश्तों पर ही नुकसानदेह असर डाल रहे हैं जिसके नतीजतन विश्व साम्यवादी आन्दोलन कमजोर हो रहा है एवं साम्राज्यवादी व जंगखोर उल्लसित हो रहे हैं।

वर्तमान वैचारिक मतभेदों ने क्यों कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच इतनी कटुता पैदा कर दी है और यहां तक कि समाजवादी देशों के आपसी रिश्तों को भी गंभीर रूप से नुकसान पहुंचा दिया है? वैचारिक मतभेदों को दूर करने के लिए कम्युनिस्ट पार्टियों द्वारा फिलहाल चलाया जा रहा यह संघर्ष क्यों मजदूर वर्ग और विश्व साम्यवादी आन्दोलन की एकता को क्षतिग्रस्त कर रहा है? क्यों समाजवादी खेमे की एकजुटता पर प्रतिकूल असर डाल रहा है? क्यों वैचारिक मतभेद के कारण समाजवादी देश अपने साझे दुश्मन, साम्राज्यवाद के खिलाफ एकाधिक मौकों पर संयुक्त रुख अख्तियार नहीं कर सके? कम्युनिस्टों के अन्तर्राष्ट्रीय मंच को इन सब सवालों का जवाब अविलम्ब ढूंढ़ निकालना है। इसके लिए जरूरत पड़े तो मंच की ओर से समूचे मामले की तह में जाकर यत्न के साथ बाकायदा जांच-पड़ताल करनी चाहिए ताकि यह पता चले कि कौन वह व्यक्ति है या कौन सी वह पार्टी है जिसने पहले-पहल विश्व साम्यवादी आन्दोलन में यह धारा शुरू की और कटुता व फूट के बीज बोये थे। वर्तमान वैचारिक संघर्ष में लिप्त विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच और समाजवादी देशों के बीच रिश्तों में कटुता पैदा होने के लिए जिन सब कारकों को हम जिम्मेदार ठहराते हैं, निश्चित तौर पर हम उन्हें चिह्नित कराना चाहते हैं। ये सब कारक नीचे उल्लेखित हैं।

पहला, जो सब कम्युनिस्ट पार्टियां वर्तमान में वैचारिक संघर्ष चला रही हैं, हालांकि उन्होंने बार-बार यही कहा है कि विश्व साम्यवादी आन्दोलन की एकता और समाजवादी खेमे की एकजुटता बरकरार रखना ही उनके लिए सबसे अहम मुद्दा है, जिसके परिप्रेक्ष्य में अन्य सब मुद्दे गौण हैं, फिर भी उन सब कम्युनिस्ट पार्टियों के कुछ नेताओं ने पूरी तरह उसके तात्पर्य को सही मायने में समझा है या नहीं, इसमें सन्देह है। क्योंकि वर्तमान स्थिति में विश्व साम्यवादी आन्दोलन की एकता और समाजवादी खेमे की एकजुटता

बरकरार रखने के महत्व व तात्पर्य को जो सही मायने में ही समझता है, वह कभी भी वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन के नेता जैसा कर रहे हैं, वैसा आचरण-व्यवहार नहीं कर सकता जिससे–उनके खुद के बीच चाहे जो भी मतभेद रहे–साम्यवादी आन्दोलन की एकता को ठेस पहुंचे, समाजवादी खेमे की एकजुटता कमजोर हो।

दूसरा, एकता और संघर्ष के बारे में द्वन्द्वात्मक दृष्टिकोण का अभाव अन्य एक कारण है जो विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों और समाजवादी देशों के बीच वर्तमान कटुता पैदा करने के लिए जिम्मेदार है। कुछ कॉमरेड एकता को यांत्रिक ढंग से समझते हैं। उनकी एकता संबंधी धारणा में वैचारिक संघर्ष की कोई गुंजाइश नहीं है। उनके लिए एकता का मतलब ही है संघर्षहीन एकता। इसलिए सैद्धांतिक वैचारिक मतभेद के आधार पर आलोचना को वे हमले की संज्ञा देते हैं। और, ऐन खासकर इसी धारणा की वजह से अब आलोचना ने वस्तुतः हमले और जवाबी हमले का रूप ले लिया है। इसी तरह, इन कॉमरेडों के लिए संघर्ष का मतलब है संयमहीन, अविराम संघर्ष जहां एकता की कोई भी गुंजाइश नहीं है। इसके फलस्वरूप वैचारिक और सांगठनिक नीति के सवाल पर और नेतृत्वकारी व्यक्तियों के आचरण के सवाल पर विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच आपसी संघर्ष आज असल में मानो दुश्मनों के बीच लड़ाई में तब्दील हो गया है। इस से एक बात साफ है कि इस वैचारिक संघर्ष के मूल में जो द्वन्द्व काम कर रहा है, उसकी प्रकृति के बारे में इनकी कोई समझदारी ही नहीं है। इसलिए जिस तरीके से यह संघर्ष चलाया जा रहा है वह वैचारिक, राजनैतिक और सांगठनिक तौर पर और कार्य संचालन के क्षेत्र में विश्व साम्यवादी खेमे की अंदरूनी एकता को मजबूत नहीं कर रहा है–जबकि इसे मजबूत करनी चाहिए थी। उल्टे, यह मतभेदों को ही और बढ़ा रहा है, कटुता और शत्रुता के मनोभाव को ही तीव्रतर कर रहा है और विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों की आपसी एकता में पड़ी दरार को और भी बढ़ा दे रहा है। यह बात अवश्य ही समझ लेनी होगी कि संघर्ष

और एकता एक ही साथ चलते रहते हैं अर्थात एकता में संघर्ष रहता है और संघर्ष भी एकता के लिए होता है। कम्युनिस्ट एकता का मायने ही है संघर्ष और विचारों का द्वन्द्व-समन्वय। इसी रास्ते कम्युनिस्ट एकता हासिल होती है, रक्षित और मजबूत होती है। कम्युनिस्ट अपने बीच वैचारिक संघर्ष केवल मात्र एकता को और भी मजबूत करने के लक्ष्य से करते हैं। संघर्ष और एकता में से किसी एक को छोड़ देने से सच्ची कम्युनिस्ट एकता निर्मित करना संभव नहीं है।

प्रसंगवश, यहां यह भी कह देना जरूरी है कि विश्व साम्यवादी खेमे में अब तक यह धारणा प्रचलित थी कि कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच जिस किसी तरह का मतभेद हो, यहां तक कि वह अगर विचारधारा और सिद्धांत के सवाल पर भी हो, उसे नेताओं की बंद कमरों में गुप्त मीटिंग करके ही हल कर लेना होगा। इस धारणा और इसके प्रयोग-व्यवहार ने संघर्ष और एकता के बारे में पूर्वोक्त गलत धारणा के पनपने और विकसित होने में कोई कम मदद नहीं की। वैचारिक संघर्ष का उद्देश्य ही है शिक्षित करना। उस शिक्षा का मतलब तो केवल मात्र नेताओं को शिक्षित करने के लिए शिक्षा नहीं है, वह कम्युनिस्ट आन्दोलन के कार्यकर्ताओं, मजदूर वर्ग और जनता को भी शिक्षित करने के लिए शिक्षा है। वैचारिक मतभेदों के मुद्दों पर अगर केवल मात्र कम्युनिस्टों के उच्चतम नेताओं की बंद कमरों की गुप्त मीटिंगों में चर्चा हों, तो आम सदस्यों, मजदूर वर्ग और जनगण को वैचारिक संघर्ष में सीधे भाग लेने से और उस से खुद को शिक्षित करने के अवसर से वंचित करना हो जाता है। इसके अलावा इस तरह गुप्त मीटिंगें करने में एक तरह के षड्यंत्रमूलक क्रियाकलापों की बू आती है जो न तो कम्युनिस्टों की विचारधारा है और न ही कम्युनिस्टों की शिक्षा। दूसरी तरफ वैचारिक चर्चा खुले में हो, तो यह वैचारिक मतभेदों को उजागर कर देती है और उन्हें हल करने में ही मदद करती है। फिर, खुली वैचारिक चर्चा और खुलेआम भूल स्वीकार करना, जनमानस में गलत आशंकाओं व संशयों के पनपने की गुंजाइश तथा प्रतिपक्ष के

विचारों को विकृत करने और लगातार अपना रुख बदलते जाने की संभावना को कम से कम कर देता है। जबकि बंद कमरों की गुप्त मीटिंगें इस संभावित खतरे को पैदा करती हैं। क्योंकि खुली वैचारिक चर्चा में हिस्सा लेने वाली पार्टियों के अपने-अपने वक्तव्य केवल मात्र उन सब पार्टियों के नेताओं तक ही सीमित नहीं रहते, बल्कि उनका विश्वव्यापी प्रचार होता है। तब किसी भी एक पार्टी के लिए प्रतिपक्ष के अभिमत को विकृत करना या खुद का वक्तव्य चुपचाप पलट डालना बहुत ही असुविधाजनक हो जाता है और अगर कोई ऐसा काम करे भी अर्थात प्रतिपक्ष के वक्तव्य को तोड़-मरोड़ कर पेश करे या खुले में भूल स्वीकार न करके ही कोई अपनी सुविधानुसार वक्तव्य बदल डाले तो दूसरे आसानी से ही इसे पकड़ सकते हैं। फिर चूंकि चर्चा खुले में हो रही है, इसलिए पार्टियों के आम सदस्य, मजदूर वर्ग और जनगण वैचारिक संघर्ष में सक्रिय तौर पर हिस्सा ले सकते हैं, विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों में किस का वक्तव्य सही है, किसका गलत है, यह जांचने-परखने का अवसर वे पाते हैं, इसके जरिये वे खुद को तो शिक्षित और सचेत कर सकते ही हैं, यहां तक कि गलती सुधार लेने के लिए नेताओं पर दबाव भी डाल सकते हैं। वैचारिक मतभेद को केन्द्रकर वैचारिक संघर्ष में हिस्सा लेने वाली पार्टियां भी खुली चर्चा के द्वारा वर्ग और जनता से सीखने का अवसर पाती हैं। विचारधारा और सिद्धांत के सवाल पर मतभेदों को लेकर खुली वैचारिक चर्चा अगर नीति सम्मत ढंग से चलायी जाये, तो यह पार्टी-कट्टरता और नेताओं के प्रति अंध भक्ति के प्रतिरोधक के तौर पर काम करेगी। अतः वर्तमान, वैचारिक मतभेदों को केन्द्रकर विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों और समाजवादी देशों के बीच आपसी रिश्तों की अवनति के लिए आम तौर पर खुली वैचारिक चर्चा को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। जिन सब कॉमरेडों ने ऐसा आरोप लगाया है वे भूल कर रहे हैं।

तीसरा, ''नेतृत्वकारी कम्युनिस्ट पार्टी'' कहने से क्या समझा जाता है, इस विषय में काफी गलतफहमी पैदा हो गयी हैं, खासकर

नेतृत्वकारी पार्टी की भूमिका और जिम्मेदारी के बारे में गैर-द्वन्द्वात्मक समझदारी ही इसका एक कारण है। नेतृत्वकारी पार्टी के विचार में आपत्तिकर कुछ नहीं है, बशर्ते इससे यह बात न समझी जाये कि विश्व साम्यवादी आन्दोलन के सामने आने वाले हरेक सवाल या समस्या पर ही एक खास कम्युनिस्ट पार्टी की नेतृत्वकारी पोजीशन अपरिवर्तनीय चिरस्थायी रहेगी। इसलिए इतिहास के एक खास दौर में किसी एक खास कम्युनिस्ट पार्टी को नेतृत्वकारी पार्टी के रूप में मान लेने का मतलब यह कतई नहीं समझ लेना है कि उस पार्टी के प्रति अंधभक्ति बनी रहे और यह सोचकर कि उस पार्टी के सभी वक्तव्य सही हैं, उन्हें अंधे की तरह मान लें। उल्टे इस अवधारणा में नेतृत्वकारी कम्युनिस्ट पार्टी और दूसरी-दूसरी कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच चिंतन-विचार को केन्द्रकर लगातार संघर्ष व विचारों के आदान-प्रदान की अवधारणा अन्तर्निहित है। एकमात्र इसके जरिये ही सामूहिक नेतृत्व को विकसित करने और उसे सक्रिय रखने के लिए अनिवार्य द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया को सुनिश्चित बनाये रखना संभव है। नेतृत्वकारी पार्टी के अलावा कोई एक छोटी पार्टी भी विश्व साम्यवादी आन्दोलन की आम लाइन पर हो या किसी एक खास सवाल पर हो, सही व्याख्या-विश्लेषण दे ही सकती है और सामूहिक नेतृत्व की सटीक अभिव्यक्ति के तौर पर उसी व्याख्या को ही दूसरी-दूसरी सभी कम्युनिस्ट पार्टियों को मान लेना चाहिए। वास्तव में ऐसा हो जाने से वह नेतृत्वकारी कम्युनिस्ट पार्टी की अवधारणा के खिलाफ नहीं चला जाता। अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति या किसी खास समस्या के बारे में किसी भी अन्य पार्टी द्वारा सही व्याख्या, सही लाइन पेश करने से, उसके द्वारा यह बात भी नहीं समझेंगे कि नेतृत्वकारी पार्टी की नेतृत्वकारी भूमिका नहीं रही और जिस पार्टी ने सही वक्तव्य पेश किया, वही नेतृत्वकारी पार्टी बन गयी। क्योंकि किसी पार्टी की नेतृत्वकारी पार्टी के तौर पर पोजीशन और भी बहुत सारी बातों पर निर्भर करती है। दुनिया में पहले समाजवादी देश की संस्थापक होने के नाते, साम्यवादी निर्माण कार्य की सबसे मूल्यवान अनुभव की

धनी होने के नाते और दुनिया के सर्वाधिक शक्तिशाली समाजवादी देश की संचालक होने के नाते सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी ने आज के विश्व साम्यवादी आन्दोलन में अद्वितीय स्थान हासिल किया हुआ है।

लेकिन इस बात से यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि विश्व साम्यवादी आन्दोलन के सभी मसलों पर सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी ही सभी फैसले लेगी और अन्य सभी पार्टियों को उन फैसलों का अंधे की तरह समर्थन देना पड़ेगा। दु:ख की बात है कि वास्तव में ज्यादातर मामलों में ही जिन बातों पर अमल हो रहा है, वे नेतृत्वकारी कम्युनिस्ट पार्टी की सही धारणा के बिल्कुल विपरीत हैं। फलस्वरूप, सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के जिस किसी भी फैसले के बारे में भिन्न मत को सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद से भटकाव के रूप में चिह्नित किया जा रहा है। वरना किस युक्ति-तर्क से सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी, स्पष्ट भाषा में न सही, आचरण के जरिये ऐसा दावा कर पायी कि उसकी 20वीं और 22वीं पार्टी कांग्रेस के फैसले अन्य सभी बिरादराना कम्युनिस्ट पार्टियां मान लेने को बाध्य हैं, अथवा उपरोक्त कांग्रेसों के कुछ फैसलों के साथ अलबानियाई पार्टी ऑफ लेबर के सहमत न होने पर सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी उसे कैसे सोवियत-विरोधी और सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद-विरोधी होने की दोषी ठहरा पायी? जो औपचारिकतावाद से ग्रस्त हैं और विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच एकता बनाये रखने की द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया के बारे में जिनकी समझ सही नहीं है, केवल वे ही यह सोच सकते हैं कि सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के जिस किसी फैसले से भिन्न मत होने से ही वे सोवियत-विरोधी हो जाते हैं और सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद का परित्याग कर देते हैं। इस तरह के व्यक्ति जिस किसी द्वन्द्व को ही विरोधात्मक द्वन्द्व के साथ गड्डमड्ड कर देने की गलती कर बैठते हैं और यह बात भी भूल जाते हैं कि विश्व साम्यवादी आन्दोलन में सामूहिक नेतृत्व एकमात्र तभी उत्पन्न हो सकता है और काम कर सकता है, जब विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया के जरिये विचारों का घात-प्रतिघात और

आदान-प्रदान बरकरार रहता है। विचारों के इस द्वन्द्वात्मक संघर्ष को त्यागने से सामूहिक नेतृत्व पैदा नहीं हो सकता। विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच एकता औपचारिक और यांत्रिक संबंध पर आधारित नहीं होती, इसके विपरीत जीवन के मूल्यबोधों के बारे में नयी समझ और विश्व सर्वहारा क्रांति सफल करने तथा विश्व साम्यवादी समाज कायम करने के अभिन्न लक्ष्य और उद्देश्य के सुदृढ़ बंधन के आधार पर खड़ी एकता-संघर्ष-एकता के द्वन्द्वात्मक सिद्धांत के द्वारा ही कम्युनिस्ट पार्टियों की एकता परिचालित होती हैं फिर यह बात भी याद रखनी होगी कि कम्युनिस्ट पार्टियों के आपसी संबंधों का जहां तक सवाल है, पार्टी चाहे छोटी हो या बड़ी, सभी कम्युनिस्ट पार्टियों का दर्जा और अधिकार बराबर का है। इस मामले में कोई किसी से श्रेष्ठतर अथवा निम्न दर्जे की नहीं है। ऐसी हालत में, जिस किसी कम्युनिस्ट पार्टी की कांग्रेस के फैसलों को अन्य बिरादराना पार्टियों से मनवा लेने का जहां तक सवाल है, बड़ी पार्टी की कांग्रेस के फैसलों और छोटी पार्टी की कांग्रेस के फैसलों को बराबर दर्जे का महत्व और मर्यादा हासिल होगी।

अतएव चाहे जितनी भी बड़ी व ताकतवर पार्टी क्यों न हो, किसी भी एक खास कम्युनिस्ट पार्टी की कांग्रेस के फैसले विश्व साम्यवादी आन्दोलन की आम लाइन या अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट फोरम द्वारा गृहीत फैसलों के रूप में स्थान ग्रहण नहीं कर सकते और दूसरी सभी कम्युनिस्ट पार्टियों पर, उनकी इच्छा के विरुद्ध उन फैसलों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से थोपा नहीं जा सकता। अगर कोई कम्युनिस्ट पार्टी, भले ही वह बहुत छोटी पार्टी भी क्यों न हो, बड़ी पार्टी की कांग्रेस के फैसलों को मानने से इनकार करे, तो उसे इसी वजह से सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के खेमे से पलायन करने वाली नहीं कहा जा सकता। इसी तरह, कोई कम्युनिस्ट पार्टी चाहे वह नेतृत्वकारी पार्टी भी हो, कम्युनिस्ट अन्तर्राष्ट्रीय फोरम के किसी फैसले से सहमत होने पर उसके खिलाफ काम नहीं कर सकती, जब तक कि वह अपने मतभेदों के विषय अन्तर्राष्ट्रीय फोरम के सामने पेश न कर ले और उन सवालों पर चर्चा-बहस

न कर ले। समस्त कम्युनिस्ट पार्टियों के आपसी संबंधों के मामले में समान अधिकारों के दर्जे को वास्तव में करनी में मानने को राजी न होने से, अपने फैसले को दूसरी-दूसरी पार्टियों की इच्छा के विरुद्ध उन पर थोप देने की कोशिश करने से या अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट फोरम के फैसले से सहमत हो जाने के बाद भी अपना अभिमत पलट लेने से उस संशोधित अभिमत को अन्तर्राष्ट्रीय फोरम में पेश किये बगैर और चर्चा किये बगैर ही पूर्व फैसलों के खिलाफ आचरण करने से उसके द्वारा वास्तव में खुद को दूसरों से ऊपर रखना हो जाता है। ऐसे मनोभाव व रुख-रवैये से वृहद पार्टी सुलभ दंभ की बू आती है। विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों में अच्छे रिश्तों को बहाल करना है, तो इस तरह के मनोभाव, रुख-रवैये, आचरण को हर कीमत पर फौरन बंद करना होगा।

चौथा, वैचारिक संघर्ष चलाने के क्षेत्र में यह एक सर्वमान्य सिद्धांत है कि दूसरे जिस किसी सदस्य को अपना वक्तव्य बताने और अपने वक्तव्य की सटीकता दूसरे को समझाकर ग्रहण करवाने के लिए कोशिश करने का हरेक सदस्य को अधिकार है। वस्तुतः, यह अधिकार न देने से अथवा कार्यक्षेत्र में इस अधिकार को प्रयोग करने में बाधा पैदा करने से वैचारिक संघर्ष का लक्ष्य और उद्देश्य ही खत्म हो जाता है। क्योंकि उस हालत में यह किसी को दूसरे की गलत विचारधारा और सिद्धांत को, सही शिक्षा के आधार पर और चर्चा के जरिये समझा-बुझाकर संशोधित करने अथवा खुद के गलत अभिमत को दूसरों के द्वारा संशोधित करवा लेने के मौके से वंचित कर देना हो जाता है। जबकि, यह मौका देना ही हर वैचारिक संघर्ष का लक्ष्य होता है। लेकिन वर्तमान में विश्व साम्यवादी खेमे में जो वैचारिक संघर्ष चल रहा है, उसमें कुछ नेता इस अधिकार का खुद मजे से इस्तेमाल करने पर भी, विरोधी पक्ष को यह अधिकार देने को राजी नहीं हैं। वरना, एक पार्टी द्वारा अपने रुख की सटीकता के बारे में पार्टी साहित्य के जरिये दूसरी पार्टी के आम कार्यकर्ताओं को समझाने की कोशिशों को कम्युनिस्ट एकता भंग कर डालने और बिरादराना कम्युनिस्ट पार्टी के अंदरूनी मामलों में दखलअंदाजी करने में शामिल कहकर इसकी निन्दा कैसे की

जा रही है? खासकर तब जब वही नेता जो इस कोशिश को तोड़-फोड़ और दखलअंदाजी कह कर इसकी निन्दा कर रहे हैं, वे अपने खुद के रुख के पक्ष में बिरादराना पार्टियों के आम कार्यकर्ताओं को प्रभावित करने के लिए हर तरह के उपायों से न केवल वैचारिक संघर्ष जारी रखे हुए हैं, बल्कि ये सब नेता अपनी पसंद के अनुसार बिरादराना पार्टियों की विभिन्न यूनिटों की संरचना बदलने हेतु बिरादराना पार्टियों पर नाजायज दबाव डालकर वास्तव में उनके अंदरूनी मामलों में दखलअंदाजी भी कर रहे हैं? एक पार्टी, जो अपने खुद के वैचारिक अभिमत की सटीकता के बारे में सचेत है और कोई गलती करने से उसे स्वीकारने और अपनी गलतियों को सुधारने में कभी नहीं डरती, वह पार्टी प्रतिपक्ष के विचारों व दृष्टिकोण के बारे में अपनी पार्टी के कार्यकताओं के अवगत होने से कभी नहीं डरती है और न ही बाधा पैदा करती है। लेकिन जो पार्टी गलती करने पर खुलेआम उसे स्वीकार करने और सुधारने के लिए तैयार नहीं और जो पार्टी वैचारिक तौर पर कमजोर है, वैचारिक चर्चा-बहस में जिसका रुख सही नहीं है, वही पार्टी लुकाने-छिपाने की तरीका पसंद करती है और कहीं पार्टी के आम कार्यकर्ताओं को नेतृत्व की कमजोरी का पता न चल जाये इस डर से पार्टी के कार्यकर्ताओं में प्रतिपक्ष के विचारों के प्रचार करने पर ऐतराज करती है। एक कम्युनिस्ट पार्टी साहित्य के माध्यम से दूसरी एक बिरादराना कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकर्ताओं में वैचारिक प्रचार अभियान चलाती है, तो उसको एक पार्टी द्वारा दूसरी पार्टी के अंदरूनी मामलों में दखलअंदाजी हरगिज नहीं माना जा सकता। क्योंकि ये दोनों मामले बुनियादी तौर पर बिल्कुल अलग मामले हैं।

यह पहले ही दिखाया गया है कि विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच विचारों का संघर्ष और द्वन्द्व-समन्वय ही है विश्व साम्यवादी खेमे की एकता का आधार। कोई भी कम्युनिस्ट पार्टी अगर अपने साहित्य और किताबों, पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से दूसरी-दूसरी कम्युनिस्ट पार्टियों के कार्यकर्ताओं में वैचारिक प्रचार अभियान चलाती है तो यह वैचारिक संघर्ष चलाने और विचारों के द्वन्द्व-समन्वय में

मदद करने के नाना प्रकार के तरीकों में से एक तरीका है। कोई भी पार्टी अगर अपनी पार्टी के आम सदस्यों में प्रतिपक्षी पार्टी को अपनी विचारधारा के सीधे प्रचार-प्रसार का अधिकार देने से इनकार करती है और जिस किसी बहाने—चाहे वह समाजवादी देशों की जनता में तनाव कम करने की दुहाई देकर हो या वैचारिक मतभेदों के शीघ्र समाधान में सहायक यथोचित माहौल पैदा करने की दलील पर हो या अन्य किसी बहाने की आड़ में हो दूसरों के विचारों के प्रचार में येन केन प्रकारेण बाधा पहुंचाती है तो यह चर्चा-बहस को दबाने की कोशिश है। विचारधारा, सिद्धांत और ज्ञान-विज्ञान के विषयों सम्बन्धी हर सवाल पर चर्चा-बहस का गला घोंटना, यह चाहे विरोधी मत के प्रचार को सीधे-सीधे निषिद्ध करने के द्वारा हो या विरोधी मतावलम्बियों की पुस्तकें जला देकर हो या उनका घिनौने ढंग से पीछा करके डायन ढूंढ़ने (witch hunting) जैसा हो और ऐसे और भी बहुत से उपायों से हो—जैसा कि द्वितीय विश्वयुद्ध के पूर्ववर्ती दौर में फासीवादियों ने किया था और विभिन्न पूंजीवादी देशों में अभी भी किया जा रहा है। इस तरह गला घोंटने का मायने है खुद को गलतियों से परे मान लेना। इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि चर्चा-बहस में जो सब व्यक्ति या दल बाधा डाल रहे हैं उनका वैचारिक रुख कितना कमजोर है, अर्थात विरोधी पक्ष का वैचारिक चर्चा-बहस में मुकाबला करने के मामले में वे असहाय हैं। जब वैचारिक मतभेदों को सही ढंग से हल करने की पद्धति के तौर पर हरेक कम्युनिस्ट पार्टी का कर्तव्य बनता है अपनी खुद की पहलकदमी से पार्टी के कार्यकर्ताओं में विरोधी पक्ष के वैचारिक मत के प्रचार की व्यवस्था कर देना, कार्यकर्ताओं में चर्चा-बहस की शुरुआत करना, उन्हें चर्चा-बहस करने के लिए उत्साहित करना, वहां उल्टे विरोधी पक्ष के मत का प्रचार करने में बाधा पहुंचाना, खासकर ठीक उस समय जब विरोधी पक्ष अपने मत का प्रचार करने की कोशिश कर रहा हो तब उसे रोक देने के लिए उतारू हो जाना तो और भी ज्यादा आपत्तिजनक है। इस तरह चर्चा-बहस का गला घोंट देना साम्यवादी विचारधारा के बिल्कुल खिलाफ है। साम्यवादी विचारधारा की बात तो दूर रही, यहां तक कि पूंजीवाद

के विकास के शुरुआती दौर में बुर्जुआ मानवतावादी विचारधारा भी विचारों और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की पक्षधर ही थी। बुर्जुआ मानवतावादी दार्शनिक जॉन स्टूअर्ट मिल ने 'आन लिबर्टी' नामक अपने प्रसिद्ध निबंध में ठीक यही बात कही थी : "यदि सम्पूर्ण मानव जाति के साथ किसी एक व्यक्ति का मत न मिले यानी एक व्यक्ति को छोड़कर सम्पूर्ण मानव जाति यदि एक मत हो जाये और अकेला होने पर भी यदि वह विरोधी मत रखता हो, तो मानव जाति को उस एक व्यक्ति के अभिमत को दबाने के लिए युक्तिसंगत नहीं ठहराया जा सकता, ठीक वैसे ही उस अकेले व्यक्ति को भी, यदि उसके पास सत्ता-क्षमता हो तो समूची मानव जाति के अभिमत को दबाने के लिए युक्तिसंगत नहीं ठहराया जा सकता...सभी को जबरदस्ती दबाने का मतलब, कभी गलती न करने की मान्यता को बरकरार रखना है।" लेकिन सर्वहारा जनतंत्र की धारणा ने जनतंत्र का सच्चा एवं और भी व्यापक रूप सुनिश्चित कर दिया है, जो स्टुअर्ट मिल के लिए सोचना भी सम्भव नहीं था। कोई एक व्यक्ति विशेष हो, एक कमेटी हो या पार्टी हो, उसे गलती से परे मानने वाली हर तरह की सोच को ही साम्यवादी विचारधारा गलत मानकर बुर्जुआ मानवतावादी विचारधारा से भी कहीं ज्यादा दृढ़ता के साथ ठुकरा देती है। प्रतिपक्ष के वक्तव्य को अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं के बीच प्रचारित करने में बाधा पहुंचाने से भी हजार गुना ज्यादा कुत्सित काम है प्रतिपक्ष के वैचारिक वक्तव्य का एक तथाकथित सारांश तैयार करके उसे अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं के बीच प्रचारित करने की व्यवस्था करना, जो सारांश के नाम पर वास्तव में अपने मनमाफिक बनाकर दूसरे के वक्तव्य की घोर विकृत व्याख्या के सिवा कुछ नहीं होता।

इस पृष्ठभूमि में विश्व साम्यवादी आन्दोलन के नेतागण जो उनकी अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं में विरोधी पक्ष के वक्तव्य प्रचार में हर संभव उपाय से बाधा पहुंचा रहे हैं वह क्या वाजिब है? विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच वैचारिक मतभेदों संबंधी सवालों पर पार्टी के आम सदस्यों की चर्चा को खामोश कर देना क्या मतभेदों का सही समाधान करने और कम्युनिस्ट एकता को

मजबूत करने के हित में है? विभिन्न पार्टियों के बीच आपस में जब वैचारिक संघर्ष चल रहा है और यह बात जब मान्य है कि इस संघर्ष में विरोधी पक्ष के समर्थकों को अपनी तरफ वैचारिक तौर पर जीत कर लाने का समान अधिकार हरेक पार्टी का ही है, तब कोई प्रतिपक्ष अगर अपनी ओर से दूसरे देश के नेताओं द्वारा भेजे गये कुछ छात्रों और टेक्नीशियनों को वैचारिक तौर पर अपने पक्ष में खींच लेने में सफल हो जाये तो उसे गैर-दोस्ताना आचरण का दोषी ठहराने का क्या कोई तर्कसंगत कारण है? अंतिम लेकिन बहुत ही महत्वपूर्ण है कि किसी भी कम्युनिस्ट पार्टी का नेता अगर विरोधी पक्ष की व्याख्या को जानबूझ कर तोड़े-मरोड़े और विरोधी पक्ष की वैचारिक व्याख्या को कांट-छांट कर अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं के सामने पेश करे, जिसके फलस्वरूप विरोधी पक्ष का पूरा रुख ही विकृत रूप में पेश किया जाता है तो क्या उसे कम्युनिस्ट नैतिकता सम्मत आचरण कहा जा सकता है? उपरोक्त सभी सवालों का जवाब है–कदापि नहीं। जबकि वर्तमान में वैचारिक संघर्ष में लगे कुछ-कुछ कम्युनिस्ट नेता इसी तरह का काम करते जा रहे हैं, जो हरगिज नहीं करना चाहिए।

यह बात याद रखें कि नेताओं, आम सदस्यों, मजदूर वर्ग और जनता की वैचारिक चेतना के स्तर को लगातार उन्नत करना हरेक कम्युनिस्ट पार्टी का महत्वपूर्ण काम है ताकि जीवन में और सामाजिक परिवेश में विभिन्न समय पर जिन सब जटिल समस्याओं से वे रूबरू हैं, उनका वे सही ढंग से मुकाबला कर सकें। आम सदस्यों की चेतना के स्तर को नेताओं जैसे उच्च स्तर तक उन्नत करना होगा। मजदूर वर्ग से जुड़े व्यक्तियों को इस तरह शिक्षित करना होगा कि वे कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बनने के लायक बन सकें। जनगण की वैचारिक चेतना के मान को इतना उन्नत करना होगा कि वे पुराने पूंजीवादी समाज से विरासत में पाये बुर्जुआ भावादर्श और बुर्जुआ आदतों के प्रभाव से मुक्त हो सकें और क्रांतिकारी शिक्षा में तप कर फौलादी चरित्र के अधिकारी हो सकें। अगर पार्टी कार्यकर्ता, मजदूर वर्ग और जनता को वैचारिक संघर्ष में प्रत्यक्ष रूप से हिस्सा लेने से, वैचारिक शिक्षा के अनुशीलन से दूर

हटाये रखा गया तो यह विशाल कर्मयज्ञ कभी सम्पन्न नहीं किया जा सकेगा।

इसके अलावा, इस प्रसंग में एक और बिन्दु पर भी चर्चा करने की जरूरत है। इच्छा और कार्रवाई में एकता कायम करना हर कम्युनिस्ट पार्टी का निहायत जरूरी फर्ज है जिसके लिए पार्टी जीवन में लौह-अनुशासन का होना आवश्यक है। यह लौह-अनुशासन कायम करना है तो पार्टी के नेताओं के प्रति आम कार्यकर्ताओं का, ऊपरी कमेटियों/बॉडियों के प्रति निचली कमेटियों/बॉडियों का तथा बहुमत के प्रति अल्पमत का समर्पण होना चाहिए। लेकिन इस लौह-अनुशासन का आधार जिस तरह से सदस्यों द्वारा बिना सोचे-समझे दिया गया समर्थन नहीं होता उसी तरह सदस्यों का जबरन हासिल किया गया समर्पण भी नहीं होता है। इसके विपरीत, यह पार्टी के नेतृत्व के प्रति कार्यकर्ताओं की ओर से दिये गये सक्रिय, सचेत और स्वैच्छिक समर्पण की मजबूत बुनियाद पर खड़ा होता है। नेतृत्व के प्रति कार्यकर्ताओं का समर्पण जितना अधिक सचेत और स्वैच्छिक हो पार्टी के अंदर एकता उतनी ही अधिक अखण्ड (मोनोलीथिक) हो उठेगी और फलस्वरूप लौह-अनुशासन को कारगर रूप से लागू करने की वास्तविक जमीन भी उतनी ही अधिक ठोस व मजबूत हो जायेगी। दरअसल, पार्टी के आम कार्यकर्ताओं की क्रांतिकारी चेतना, उन के वैचारिक स्तर की लगातार उन्नति और उनकी कम्युनिस्ट सुलभ भूमिका को सचेत व सक्रिय रूप से निभाना ही, अंतिम विचार-विश्लेषण से, पार्टी को वैचारिक गलती और भटकाव से बचाये रखने की असली गारन्टी है। समूची पार्टी के सदस्यों की वैचारिक चेतना को विकसित करना है तो नेतृत्व के लिए यह निहायत जरूरी फर्ज बनता है कि वह आम कार्यकर्ताओं में ऐसी मानसिकता पैदा करे कि जिससे उनमें हर मुद्दे को मार्क्सवाद-लेनिनवाद की कसौटी पर कसकर देखने की मानसिकता का संचार हो, उन्हें ऐसा प्रशिक्षण दे कि वे पार्टी-कट्टरता सहित हर तरह की कट्टरता को छोड़ दें और उनमें ऐसी भावना भर दे कि गलती दिखा देने के बावजूद भी नेतृत्व अगर सुधरने को तैयार न हो तो जरूरत पड़ने पर उस नेतृत्व के खिलाफ भी

साहस के साथ उठ खड़ें हो सकें। इस क्रांतिकारी मानसिकता से आम कार्यकर्ताओं को शिक्षित कर डालने के बजाय अगर वैचारिक सवाल पर पार्टी के कार्यकर्ताओं में कट्टरता को बढ़ावा दिया जाता है और इसके लिए दूसरी कम्युनिस्ट पार्टी का वैचारिक वक्तव्य क्या है, यह जानने का और वह वक्तव्य ठीक है या गलत इस पर विचार करके देखने का मौका कार्यकर्ताओं को दिये बगैर अगर वैचारिक सवाल पर नेतृत्व के समर्थन में उठकर खड़े रहना ही उनका कर्तव्य बताकर उनका आह्वान किया जाता है तो यह निकृष्ट किस्म की पार्टी-अंधता में लिप्त हो जाना है और कम्युनिस्ट शिक्षा-विरोधी जघन्य अपराधपूर्ण आचरण करने के लिए ही कार्यकर्ताओं, मजदूर वर्ग और जनगण को प्रोत्साहन देना है।

यह गौर करने पर वाकई ताज्जुब होता है कि मौजूदा वैचारिक संघर्ष के मामले में कम्युनिस्ट नेताओं में से कोई-कोई नेता, खासकर सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के नेता, अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं, अपने देश के मजदूर वर्ग और जनता को उस सही क्रांतिकरी चेतना और मानसिकता से फौलाद की तरह मजबूत नहीं बना रहे हैं, जिससे वे हर तरह की अंधता और उग्रता से घोर नफरत करना सीखें और मतभेदों को लेकर वैचारिक संघर्ष चलाने के योग्य बन जायें, बल्कि देखा जा रहा है कि ये नेता पार्टी के कार्यकर्ताओं, देश के मजदूर वर्ग और जनगण से विरोधी पक्ष के वक्तव्य व मत को छिपाकर रखने की भरसक कोशिश कर रहे हैं और विरोधी पक्ष के विचारों, मतों का मुकाबला करने के उपाय के तौर पर उनमें दलीय उग्रता और यहां तक कि अंधराष्ट्रवादी मानसिकता को उकसाने की चेष्टा करने से भी बाज नहीं आ रहे हैं। यह बात समझने की जरूरत है कि इन सब कामों के द्वारा मौजूदा नेतृत्व को फौरी तौर पर जितना भी लाभ क्यों न हो, अंधता और दलीय उग्रता को इस तरह उकसावा दिया गया तो यह लाजिमी तौर पर विश्व साम्यवादी आन्दोलन में एक-दो नहीं, बल्कि बहुत से भस्मासुरों को पैदा करेगी, जो अन्ततः साम्यवाद के अपार नुकसान का कारण बनेंगे। पहले ही नेताओं के फौरी लाभों की तुलना में नुकसान काफी ज्यादा हो चुका है। वर्तमान जिन सब नेताओं ने

अपनी पार्टी के आम कार्यकर्ताओं में और देश की जनता में पार्टी उग्रता को, खुल्लम-खुल्ला तौर पर संकीर्ण राष्ट्रीयतावादी जज्बातों को सूक्ष्म तौर पर भड़का कर साम्यवादी विचारधारा को जो नुकसान पहुंचाया है, उसका प्रत्यक्ष अंजाम देखने के लिए शायद ये मौजूदा नेता जीवित न रहें, लेकिन इसकी घातक प्रतिक्रिया दुनिया के विभिन्न देशों के श्रमिक जनसाधारण पर भविष्य में दशक पर दशक तक चलती रहेगी, राष्ट्रगत अलगाव, संकीर्ण राष्ट्रीयतावादी मानसिकता और अंध दलीय उग्रता से ऊपर उठकर विश्व साम्यवादी समाज कायम करने के संग्राम में खुद को लगा देने की जो जिम्मेदारी विश्व के हर देश के मजदूर वर्ग और जनता की है उसे जबरदस्त क्षति पहुंचेगी।

समूचे विश्व में और ज्ञान-विज्ञान की समस्त शाखाओं में कम्युनिज्म की विजय सुनिश्चित करने के लिए कम्युनिस्टों की वैचारिक चेतना का मान उन्नत करना होगा और अंध दलीय उग्रता को पूरी तरह दूर भगाना होगा। इसलिए विश्व साम्यवादी आन्दोलन के इन सब नेताओं ने बार-बार प्रतिपक्ष के वैचारिक रुख का मुकाबला करने के उपाय के तौर पर अपने-अपने देश के जनगण में संकीर्ण राष्ट्रीयतावादी जज्बात जगा डालने का और पार्टी के कार्यकर्ताओं में अंध दलीय उग्रता को भड़का देने का जो रास्ता लिया है, उसे उन्हें जड़ से उखाड़ फेंकना होगा। इसके अलावा, वर्तमान में वैचारिक संघर्ष चलाने के मामले में लगायी गयी तमाम पाबन्दियों और नियंत्रणों को फौरन हटा लेना होगा, बिरादराना कम्युनिस्ट पार्टियों के सदस्यों में उन्मुक्त और अबाध वैचारिक मत का प्रचार करने का हर तरह का मौका उदार मनोभाव से देना होगा, सिर्फ एक ही शर्त रहेगी कि एक कम्युनिस्ट पार्टी के अंदरूनी वैचारिक संघर्ष में जो कम्युनिस्ट आचार संहिता और शिष्टाचार मान कर चलने की बात है, इस मामले में भी इसे कठोरता के साथ मान कर चलना होगा।

पांचवां, कम्युनिस्ट आचार संहिता तो लाजिमी तौर पर ही, यहां तक कि बुर्जुआ मानवतावादी नैतिकता भी हरेक व्यक्ति के मामले

में यह निर्देश देती है कि वह दूसरों के द्वारा दर्शाये जाने के बाद, खुलेआम अपनी गलती को विनम्रता और साहस के साथ स्वीकार कर ले और खुद को सुधारे तथा सही रास्ते पर चले। इस नैतिक आचार संहिता को तहेदिल से मान कर चलने की मांग कम्युनिस्टों से तो और भी ज्यादा है। अपनी गलती खुलेआम स्वीकार न करना तथा साथ ही वैचारिक संघर्ष में विरोधियों के तर्क के सामने न ठहर पाने पर अपना शुरुआती वक्तव्य, रुख निरंतर बदलते रहने का मायने तो यही है कि वह अहमबोध से ग्रस्त है और उसमें नम्रता का अभाव है। यह विनय का अभाव और अहमबोध कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच वैचारिक मतभेदों को सही ढंग से हल करने के रास्ते में जबरदस्त रोड़ा है। लेकिन खेद की बात है कि आज के कुछ विशिष्ट कम्युनिस्ट नेताओं के आचरण में चरित्र की यही खामियां-त्रुटियां दिखाई दे रही हैं, ये अपनी गलतियों को खुले आम स्वीकारने की बजाय अपने पहले वाले वक्तव्य से, रुख से लगातार हटते जा रहे हैं सिर्फ इतना ही नहीं, बल्कि उल्टे यह भी दावा कर रहे हैं कि वे तो शुरू से ही सही बात कहते आ रहे हैं। ये कॉमरेड यह बात भूल जाते हैं कि जो कोई गलती करता है वह उन गलतियों को खुलेआम स्वीकार कर लेने और कुछ मामलों में दूसरे कॉमरेडों की श्रेष्ठता मान लेने से वे खुद छोटे नहीं हो जाते, बल्कि यह उनके कम्युनिस्ट चरित्र को निरंतर उन्नत करने में ही मदद करता है। जो व्यक्ति विनय के अभाव और अहमबोध से ग्रसित हो वह सहज ही व्यक्तिपूजावाद का भी शिकार हो जाता है। अत: वर्तमान वैचारिक संघर्ष के मामले में उन सब नेताओं के आचार-आचरण में साफ तौर पर उजागर यह अहमबोध का रुझान और विनय का अभाव जितनी जल्दी दूर हो जाये उतनी जल्दी विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच स्वस्थ संबंधों की बहाली की संभावना बढ़ेगी और उनमें वैचारिक मतभेदों को सही ढंग से हल करने के लिए उपयुक्त माहौल पैदा करना संभव होगा।

हमने पहले ही चर्चा करके दिखाया है कि जब तक कोई एक पार्टी इस अंतिम निष्कर्ष पर नहीं पहुंची है कि दूसरी कोई एक विशेष पार्टी या किसी भी क्षेत्र में एकाधिक पार्टियां अब कम्युनिस्ट

पार्टी नहीं रही और उनके साथ वैचारिक मेल संभव नहीं, तब तक उनके बीच वैचारिक मतभेदों को दूर करने के उद्देश्य से संचालित वैचारिक संघर्षों को मजदूर वर्ग और विश्व साम्यवादी आन्दोलन की एकता में खलल नहीं डालना चाहिए, समाजवादी खेमे की एकजुटता को कमजोर नहीं करना चाहिए और तमाम समाजवादी राष्ट्रों के साझे दुश्मन साम्राज्यवाद के खिलाफ एकताबद्ध रूप में खड़े होने के संघर्ष में रोड़े नहीं अटकाने चाहिएं। वर्तमान वैचारिक संघर्ष में लिप्त पार्टियां अभी तक भी उस हद तक नहीं जा पहुंची हैं कि एक-दूसरे को वर्ग-द्रोही और दुश्मन का एजेन्ट मानने लगी हैं और वे इस निष्कर्ष पर भी नहीं पहुंची हैं कि उनके बीच आपस में दोबारा वैचारिक मेल होना संभव नहीं है। वे अभी भी मानती हैं कि उनके प्रतिपक्ष की पार्टियां कहीं सुधारवाद तो कहीं जड़सूत्रवाद की गंभीर कमी-खामियों और भटकावों की शिकार होने पर भी, वे कम्युनिस्ट हैं। वे अभी भी आशा करती हैं और इस मामले में ठीक ही आशा करती हैं कि उनके मतभेदों के समाधान के माध्यम से उनके बीच वैचारिक मेल की संभावना और विश्व साम्यवादी खेमे की एकता को वैचारिक, राजनैतिक, सांगठनिक तौर पर वास्तव में कार्रवाई के क्षेत्र में मजबूत करने की हर संभावना मौजूद है।

तर्क-वितर्क में लिप्त पार्टियों का जब तक यही सही दृष्टिकोण है तो विश्व साम्यवादी आन्दोलन के वर्तमान नेता जब तक वैचारिक संघर्ष में व्यक्तिगत हमले, रुढ़ व्यवहार और यहां तक कि कटु उक्ति से भी व्यक्तिगत तौर पर विचलित न होने लायक कम्युनिस्ट शिक्षा का स्तर और एक-दूसरे को समझने की मानसिकता हासिल न कर पायें तब तक तर्क संगत है कि वर्तमान वैचारिक संघर्ष इस तरह चलाया जाये कि विरोधी पक्ष की बातों को तोड़-मरोड़ कर पेश करने या गलत व्याख्या करने या रूखे व्यवहार व कटु उक्ति का इस्तेमाल करने से कम से कम जरूर बचा जाये। नेताओं से कम्युनिस्ट चरित्र के इस स्तर की आशा रखनी है तो आम सदस्यों का भी क्रांतिकारी चेतना का एक सापेक्ष अर्थ में उच्च स्तर रहना चाहिए ताकि वे भी हरेक सवाल को द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की कसौटी पर जांच-परख कर विचार कर सकें और विश्व साम्यवादी

आन्दोलन में चिंतन की सही लाइन कायम करने के उद्देश्य से दूसरी-दूसरी कम्युनिस्ट पार्टियों के सदस्यों के साथ वे भी एक साथ मिलकर, जरूरत पड़े तो अपनी-अपनी पार्टियों के नेताओं के खिलाफ भी उठ खड़े हो सकें।

यह बात भी व्याख्या करके बतायी जा चुकी है कि विचारधारा और सिद्धांत के सवालों पर एकता पर पहुंचने के लिए लम्बे समय की जरूरत है। इस संबंध में जल्दबाजी में उठाया गया हर कदम मामले को महज जटिल ही बना डालेगा। इसलिए वैचारिक मतभेदों को फिलहाल खुला छोड़ रखें। इससे पूर्व उल्लेखित सुझावों के आधार पर समुचित शालीन आचरण मानते हुए वैचारिक संघर्ष चलाते रहें। लेकिन यह वैचारिक संघर्ष चलाते समय कम्युनिस्ट पार्टियों और समाजवादी राष्ट्रों के बीच जो मनमुटाव फिलहाल पैदा हो चुका है, उसे फौरन दूर करना और स्वस्थ स्वाभाविक संबंध कायम करना जरूरी है। इस लक्ष्य-उद्देश्य से काम करना ही हरेक कम्युनिस्ट का लाजिमी फर्ज बनता है। इस बात की जरा भी परवाह किये बिना कि कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच वैचारिक मतभेद कितने गहरे हैं और उन मतभेदों को दूर करने के लिये यह संघर्ष कितनी तीव्रता से चलाया जाता है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए निम्नलिखित कदम फौरन उठाये जाने का हम सुझाव देते हैं :

1. किसी भी कम्युनिस्ट पार्टी या समाजवादी राष्ट्र को दूसरे की असुविधाजनक स्थिति की तुलना में अपनी सुविधाजनक स्थिति का फायदा उठाकर दूसरी कम्युनिस्ट पार्टी या समाजवादी राष्ट्रों के अंदरूनी सांगठनिक और प्रशासनिक मामलों में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से दखलअंदाजी नहीं करनी चाहिए।

2. वर्तमान में जिन सब मुद्दों पर सैद्धांतिक मतभेद दिखाई दिये हैं, सिर्फ उन्हीं से जुड़े विचारधारात्मक और नीतिगत सवालों पर ही दूसरी बिरादराना कम्युनिस्ट पार्टियों के सदस्यों के बीच खुला वैचारिक संघर्ष चलाने का अधिकार हरेक कम्युनिस्ट पार्टी को रहना चाहिए।

3. किसी भी कम्युनिस्ट पार्टी को किसी भी हालत में ऐसी गतिविधियों में लिप्त नहीं होना चाहिए, जिनसे मजदूर वर्ग और साम्यवादी आन्दोलन की एकता को तोड़नेवाला असर पड़े।

4. किसी भी कम्युनिस्ट पार्टी या समाजावदी राष्ट्र को ऐसा कोई कदम नहीं उठाना चाहिए, जिससे समाजवादी देशों के बीच स्वाभाविक कूटनीतिक संबंध में तनाव और विघ्न पैदा हो। जहां भी इस तरह के संबंध टूट गये हैं, वहां तुरंत उन्हें दोबारा कायम किया जाना चाहिए।

5. किसी भी समाजवादी राष्ट्र को दूसरे किसी समाजवादी राष्ट्र को मुसीबत में डालने के लिए न तो पहले से वादा की गयी आर्थिक सहायता बंद करनी चाहिए और न ही व्यापार-वाणिज्य संबंध बदलने चाहिए। जहां कहीं भी समाजवादी राष्ट्रों के बीच इस दौरान व्यापारिक-वाणिज्यिक संबंध और आर्थिक सहयोग पर बुरा असर पड़ा हो, तो तुरंत वहां ये संबंध स्वाभाविक बना लेने चाहिए और वादा की गयी आर्थिक सहायता देनी चालू की जानी चाहिए।

6. समाजवादी खेमे की एकजुटता को कमजोर कर देने वाला कोई भी काम किसी भी कम्युनिस्ट पार्टी या समाजवादी राष्ट्र को नहीं करना चाहिए। साम्राज्यवाद-पूंजीवाद के खिलाफ जनता के क्रांतिकारी संघर्षों से जुड़े तमाम मुद्दों पर समाजवादी राष्ट्रों को साम्राज्यवादियों के खिलाफ एकताबद्ध रूप से खड़ा हो जाना चाहिए।

विश्व साम्यवादी आन्दोलन के नेताओं से हम अपील करते हैं कि विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच और समाजवादी देशों के बीच स्वस्थ स्वाभाविक संबंध बहाल करने के लिए वे तहेदिल से पुरजोर प्रयास करें। वे जल्दबाजी में ऐसे कदम न उठायें और न ही ऐसी कार्रवाइयां करें, जिनसे कि पूरी दुनिया के मजदूर-किसानों और अन्य शोषित जनसमूहों के खून-पसीने से सींचकर निर्मित हुई

सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद व समाजवाद की मजबूत नींव कमजोर हो जाये और क्रांतिकारी संघर्षों की प्रगति कई दशक पीछे धकेल दी जाये।

सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयवाद जिन्दाबाद!
मजदूर वर्ग की एकता जिन्दाबाद!

यह लेख पहले पहल 1 सितम्बर 1963 को पार्टी मुखपत्र सोशलिस्ट यूनिटी में प्रकाशित हुआ था।